प्रस्तुतकर्ता

संजय भारती

असिस्टेंट प्रोफेसर -समाजशास्त्र

राजकीय महाविद्यालय जक्खिनी, वाराणसी

विषय- समाजशास्त्र

नई शिक्षा नीति – 2020

इकाई –प्रथम

बी.ए. - प्रथम सेमेस्टर(माइनर एंड मेजर)

पुस्तक- समाजशास्त्र के मूल तत्व एवं अवधारणाएं

उपशीर्षक- धर्म का अर्थ, परिभाषा तथा तत्व

स्वघोषणा

(disclaimer/ self-Declaration)

यह सामग्री विशेष रुप से शिक्षण और सीखने को बढ़ाने के शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए है।आर्थिक /वाणिज्यिक अथवा किसी अन्य उद्देश्य के लिए इसका उपयोग पूर्णता प्रतिबंधित है। सामग्री के उपयोगार्थ इसे किसी और के साथ वितरित, प्रसारित या साझा नहीं करेंगे और इसका प्रयोग व्यक्तिगत ज्ञान की उन्नति के लिए ही करेंगे। इस कंटेंट में जो जानकारी दी गई है वह प्रमाणित है और मेरे ज्ञान के अनुसार सर्वोत्तम है।

" The content is exclusively meant for academic purpose and for enhancing teaching and learning. Any other used for economic / commercial purpose is strictly prohibited the users of the content shall not distribute, disseminate or share it with anyone else and its use is restricted and advancement of individual knowledge. The information provided in this e-content is authentic and best as per my knowledge."

- धर्म का अर्थ एवं परिभाषा
- धर्म की विशेषताएं
- धर्म के तत्व

धर्म का अर्थ एवं परिभाषा

धर्म को अंग्रेजी में रेलीजन कहते हैं जो लैटिन शब्द लिजोर से बना है जिसका अर्थ है आपस में बांधना या एक सूत्र में पीरोना । स्टीफन फच्स के मतानुसार रेलीजन या धर्म शब्द रेलिगेयर से बना है जिसका अर्थ है बांधना अर्थात मनुष्य को ईश्वर से संबंधित करना। धर्म शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत भाषा के धृ शब्द से मानी जाती है जिसका अर्थ है धारण करना अर्थात सभी जीवों के प्रति मन में दया धारण करने को ही धर्म कहा गया है। हिंदू धर्म ग्रंथों में सात्विक गुणों को धारण करने को ही धर्म माना गया है। धर्म को विभिन्न विद्वानों ने परिभाषित किया है।

एच.एम.जॉनसन के अनुसार- धर्म कम या अधिक मात्रा में आलौकिक तत्व तथा आत्मा से संबंधित विश्वासों और आचरणों की एक संगठित व्यवस्था है।

एमिल दुर्खीम के अनुसार- धर्म पवित्र वस्तुओं से संबंधित विश्वास तथा कर्मकांडों की एक संगठित व्यवस्था है जो उन व्यक्तियों को एक एकल सामाजिक नैतिक समुदाय में बांधता है जो इसका अनुसरण करते हैं ।

मैलिनोवस्की के अनुसार- धर्म क्रिया की एक विधि है और साथ ही विश्वासों की एक व्यवस्था भी धर्म एक समाजशास्त्री घटना के साथ-साथ एक व्यक्तिगत अनुभव भी है।

टाइलर के अनुसार- धर्म आध्यात्मिक शक्ति में विश्वास है।

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि धर्म और अलौकिक वस्तुओं शक्तियों सत्ता के संबंध में विश्वास और व्यवहार की ऐसी एकीकृत व्यवस्था है, जो अनुयायियों के जीवन

को गंभीर रूप से प्रभावित करती है। धर्म में यह विश्वास किया जाता है कि अलौकिक शक्ति प्रकृति एवं मानव जीवन को नियंत्रित एवं निर्देशित करती है।

धर्म की विशेषताएं -

1. अलौकिक शक्ति में विश्वास धर्म की सर्व प्रमुख विशेषता है जिसमें किसी न किसी तरह की अलौकिक एवं दिव्य शक्ति में यह विश्वास किया जाता है कि यह मानव से श्रेष्ठ है यही पूरे विश्व को संचालित करती है।
2. धर्म में धार्मिक विश्वास के लिए विभिन्न धार्मिक क्रियाओं जैसे पूजा-पाठ, कर्मकांड, यज्ञ, हवन एवं बलि कार्य किए जाते है।
3. धर्म का संबंध पवित्रता की धारणा से भी जुड़ा हुआ है धर्म में उससे संबंधित सभी वस्तुओं, क्रियाओं, पुस्तकों, प्रतीकों आदि को पवित्र माना जाता है।
4. भावात्मक एवं मानसिक रूप से लोग अलौकिक शक्ति में विश्वास व श्रद्धा भक्ति आदर एवं प्रेम की भावना तथा संवेग से जुडे होते है। लोग अलौकिक शक्ति से डरते भी हैं और उसे प्रेम भी करते हैं। इस प्रकार धर्म भय मिश्रित श्रद्धा है।
5. धर्म में अलौकिक शक्ति को प्रसन्न करने एवं उससे बचने के लिए पूजा-पाठ आराधना प्रार्थना की जाती है।
6. धर्म में तर्क वितर्क एवं वैज्ञानिक तथ्यों को सम्मिलित नहीं किया जाता है क्योंकि यह भावना और विश्वास पर आधारित होता है।

धर्म के तत्व-

धर्म के तत्व की विस्तृत व्याख्या जॉनसन ने किया है। विभिन्न विद्वानों के अनुसार धर्म के पांच तत्व होते हैं।

1. विश्वास अर्थात किसी अलौकिक शक्ति और सत्ता एवं वस्तु में विश्वास किया जाता है ।
2. कर्मकांड अर्थात यह नियमित धार्मिक गतिविधि जो विश्वास को बनाए रखने के लिए किया जाता है ।

मैलिनोवस्की ने कहा धर्म में कर्मकांड सबसे महत्वपूर्ण है यस. पी. नागेंद्र के अनुसार भी कर्मकांड धर्म के सबसे महत्वपूर्ण तत्व है कर्मकांड इतने नियमित और स्थापित होते हैं कि यह संस्था होते हैं इन्हें कर्मकांड संस्था भी कह सकते हैं।

रेडीन ने तो कहा कि जब कर्मकांड बहुत उत्साह से किए जाते हैं तब मानसिक संतोष बढ़ता है।

एमिल दुर्खीम ने कहा जब कर्मकांड सामूहिक रूप से शारीरिक क्रियाओं के साथ किया जाता है तब इससे एकता बढ़ती है।

3 . नियम- अनुशंसा निषेध प्रत्येक धर्म में नियम व्यापक होते हैं जो अर्थव्यवस्था एवं राजनीति के संबंध में भी होते हैं प्रत्येक धर्म में व्यक्ति के आचरण के कुछ नियम एवं व्यवहार के निर्देश होते हैं तथा कुछ चीजें न करने की मनाई भी होती है।

4 . संगठन प्रत्येक धर्म में किसी न किसी प्रकार का संगठन होता है जिसे हम चार प्रकार से बांट सकते हैं।

1. धार्मिक संगठन - एक धर्म को मानने वाले सभी लोग या एक ईश्वर में विश्वास करने वाले लोग जैसे सभी हिंदू ,सभी ईसाई।
2. व्यापक विभाजन- धर्म के सर्व व्यापक विभाजन जैसे वैष्णव, शैव, शिया, सुन्नी, कैथोलिक, प्रोटेस्टेंट।
3. संप्रदाय - व्यवहार और विश्वास के आधार पर बने हुए समूह जैसे स्वामीनारायण संप्रदाय, नाथ संप्रदाय ।

4. पंथ- जब दो समूह केवल व्यवहार के आधार पर एक दूसरे से भिन्न है जैसे कबीर पंथ मैक्स वेबर के दोस्त अनिष्ट ट्रायल्स ने चर्च और संप्रदाय में अंतर किया ।
5. दर्शन- विचारधारा प्रत्येक धर्म में एक दार्शनिक व्याख्या होती है जिससे स्वर्ग और नर्क की चर्चा होती है। प्रत्येक धर्म में एक विचारधारा होती है। कार्ल मार्क्स ने कहा दैवी शक्तियों में विश्वास के कारण धर्म महत्वपूर्ण होता है इसमें विचारधारा और दर्शन के कारण यह अत्यधिक प्रभावशाली हो जाती है।

संदर्भ ग्रंथ-

1. अग्रवाल, डॉ. जी. के., नवीन संस्करण, 2017 ,समाजशास्त्र, बी़. ए. तृतीय वर्ष, यस. बी. पी.डी. पब्लिकेशन हाउस,आगरा।

2.अग्रवाल, डॉ. जी. के., नवीन संस्करण, 2017 ,समाजशास्त्र, बी़. ए. द्वितीय वर्ष, यस. बी. पी.डी. पब्लिकेशन हाउस,आगरा।

3.. रावत, हरीकृष्ण, 2005, समाजशास्त्री चिंतक एवं सिद्धांतकार, रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

4..रावत, हरीकृष्ण, 2015, उच्चतर समाजशास्त्रीय विश्वकोश , रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

5. शर्मा, एम. एल. एवं शर्मा डी. डी, 2002, समाजशास्त्र, साहित्य भवन पब्लिकेश,आगरा।

6.. शर्मा, एम. एल. एवं शर्मा डी. डी, 2005, सामाजिक मानवशास्त्र, साहित्य भवन पब्लिकेश,आगरा।

Thanku